11119CH11

एकादश अध्याय

संस्कृत कवयित्रियाँ

कवयित्री का तात्पर्य है काव्य रचना करने वाली महिला। पुरुषों की ही तरह महिलाएँ भी काव्य रचना करती रही हैं। कुछ कवयित्रियों ने तो स्फुट पद्य ही लिखे परन्तु कतिपय ने उत्कृष्ट कोटि की प्रबन्ध रचनाएँ भी की, जिनमें महाकाव्य तथा चम्पू काव्यादि सम्मिलित हैं।

कवयित्रियों की परम्परा वैदिक युग में ही प्रारम्भ हो गई थी। *ऋग्वेद* में जहाँ मंत्रद्रष्टा ऋषियों के दर्शन होते हैं, वहीं अपाला, विश्ववारा, काक्षीवती, घोषा आदि ऋषियों की पुत्रियाँ एवं लोपामुद्रा आदि ऋषिपत्नियाँ वेद मन्त्रों का दर्शन करने वाली ऋषिकाओं के रूप में दृष्टिगत होती हैं। श्रद्धा, कामायनी, शची, पौलोमी तथा अदिति आदि देवकोटि की कवयित्रियाँ हैं। सार्पराज्ञी आदि को हम देवमानवेतर कोटि की ऋषिका मान सकते हैं।

पुरुष कवियों की ही तरह इन कवयित्रियों ने भी अपनी कविता में अद्भुत संवेदनाएँ प्रकट की हैं। कहीं अम्भृण ऋषि की कन्या ब्रह्मसाक्षात्कार-जन्य अपनी गहन आध्यात्मिक अनुभूतियों को व्यक्त करती है, तो कहीं शची इन्द्राणी सपत्नी-निवारण जैसे लौकिक विषय की चर्चा करती है। शची की भावनाएँ सामान्य नारी मनोविज्ञान से जुड़ी हैं। वह अपने सौभाग्य को कथमपि खण्डित नहीं देखना चाहती। अपाला महामुनि कृशाश्व की पत्नी तथा अत्रि की पुत्री है। वह शरीरदोष के कारण पति-परित्यक्ता है। उसकी कविता में उसकी जीवनव्यथा अनुस्यूत है। अश्विनी कुमारों की असीम कृपा से अपाला पुनः सौभाग्यवती बन जाती है।

वैदिक कवयित्रियों की यही परम्परा लौकिक संस्कृत कविता में भी सतत रूप से मिलती है। *रामायण, महाभारत* तथा *पुराणों* के अनन्तर संस्कृत कविता उत्तरोत्तर समाज सापेक्ष होती चली गई है। कवियों ने देव संस्कृति तथा देव समाज के साथ ही साथ मानव संस्कृति तथा मानव समाज को भी कविता का विषय बनाना प्रारंभ किया। यद्यपि कविता की इस धारा में वर्चस्व तो पुरुष कवियों का ही दिखाई देता है, तथापि सांस्कारिकी कवि प्रतिभा से युक्त कुछ महिलाएँ भी पुरुषों के समकक्ष काव्य सर्जना में निरत दिखाई देती हैं। जिनमें विज्जका (विज्जिका, विजयाङ्का), शिलाभट्टारिका, मधुरवाणी, मारुला, मोरिका, विकटनितम्बा, देवकुमारिका, फल्गुहस्तिनी, तिरुमलाम्बा, रामभद्राम्बा तथा प्रभुदेवी आदि प्रमुख हैं।

© NCERT not to be republished

इन कवयित्रियों में अधिकांश के तो स्फुटपद्य मात्र मिलते हैं जो परवर्ती आलंकारिकों द्वारा उद्धृत किये गये हैं। दशम शताब्दी ई. में उत्पन्न आचार्य राजशेखर की पत्नी *अवन्तिसुन्दरी* तो काव्यशास्त्रीय चिन्तन में भी अग्रसर थी। स्वयं राजशेखर ने काव्यमीमांसा में, अवन्तिसुन्दरी के मतों तथा सिद्धान्तों की सोदाहरण व्याख्या की है। *गंगादेवी ने मधुराविजयमहाकाव्य,* रामभद्राम्बा ने *वरदाम्बिकापरिणय* चम्पू तथा *तिरुमलाम्बा* ने *वीरकम्परायचरित* की रचना कर अपनी प्रबन्धात्मक सर्जना प्रतिभा का भी परिचय दिया है। तंजौर-नरेश रघुनाथनायक की सभा में कवयित्री मधुरवाणी ने नरेश द्वारा लोकभाषा में प्रणीत *रामायण* का संस्कृत में रूपान्तर किया था। *यादवराघवपाण्डवीयम्* के रचनाकार पं. अनन्ताचार्य की पुत्री त्रिवेणी की वेदान्त दर्शन में अबाधित गति थी। इन्होंने प्रबोध-चन्द्रोदय की शैली में शान्तरस प्रधान *रंगाभ्युदय, सम्पत्कुमारविजय* जैसे उत्कृष्ट प्रतीकात्मक रूपकों की रचना की। तमिलनाडु के कुम्भकोणम् की कवयित्री *ज्ञानसुन्दरी* (19वीं–20वीं शताब्दी) प्रणीत *हालास्यचम्पू* में छ: स्तबक हैं। जिनमें शिव के अवतार सुन्दरेश्वर और देवी मीनाक्षी के परिणय का मनोहारी वर्णन किया गया है।

आधुनिक संस्कृत सर्जना में भी महिला कवयित्रियों का योगदान अभिनन्दनीय है। बीसवीं शताब्दी की काव्य-रचयित्रियों में पण्डिता क्षमाराव का नाम सर्वोपरि है। विदेशी शासन से मुक्ति की उत्कट कामना और तात्कालिक भारतीय समाज में महात्मा गान्धी के बढ़ते प्रभाव से समाज में संचरित जनजागृति को आधार बनाकर पुणे निवासी शंकर पाण्डुरंग की पुत्री क्षमाराव ने संस्कृत जगत को अनेक उत्कृष्ट रचनाएँ प्रदान कीं। इनमें *सत्याग्रहगीता, स्वराजविजय, उत्तरसत्याग्रहगीता, तुकारामचरित, शंकरजीवनाख्यान, ज्ञानेश्वरचरित, रामदासचरित* महाकाव्य हैं। भारतभूमि के महापुरुषों और सन्तचरितों को इनमें प्रस्तुत किया गया है। *मीरालहरी* खण्डकाव्य है। *कथापंचक* (पद्यात्मक) *ग्रामज्योति* (पद्यात्मक) *कथामुक्तावली* (गद्यात्मक) कथा संग्रह हैं। ये रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं और राष्ट्रप्रेम का जीवन्त निदर्शन हैं। इनमें विधवा-विवाह, बाल-विवाह, संतानहीनता, मद्यपान, जुआखोरी आदि विविध सामाजिक विषयों को सशक्तता के साथ उठाया गया है।

आधुनिक युग की इस अविच्छिन्न शृंखला में रवीन्द्रभारती विश्वविद्यालय की उपकुलपति पद को गौरवान्वित कर चुकी रमाचौधुरी ने *पल्लीकमल, देशदीप, मेघमेदुरमेदनीय, यतीन्द्रयतीन्द्र, निवेदितनिवेदित, भारततात, गणदेवता* आदि 25 नाटकों का प्रणयन कर प्रचुर ख्याति पाई है। नाट्यरचना के माध्यम से संस्कृत के प्रचार-प्रसार

Reprint 2026-27

में आजीवन संलग्न रहने वाली पण्डिता क्षमाराव की पुत्री *लीलाराव दयालु* (मुम्बई) ने *अनूप, कृपाणिका, कपोतालय, जयन्तुकुमायुनीयाः, गणेशचतुर्थी, होलिकोत्सव, मीराचरित* आदि 24 एकांकियों का प्रणयन किया और स्वदेश में ही नहीं, अपितु नेपाल, पेरिस आदि देशों में भी इनका अभिनय कराया। *वनमाला भवालकर* (सागर) ने *पाददण्ड* (एकांकी) *रामवनगमन, पार्वतीतपश्चर्या, अन्नदेवता* आदि नृत्यनाटिकाओं का संस्कृत में प्रणयन किया है। *श्रीसत्यसाईंसदाचारसंहिता* साईंबाबा की स्तुति में प्रणीत भावपूर्ण स्तोत्र रचना है। *कमला पाण्डेय* ने11 सर्गों में *रक्षत गंगाम्* महाकाव्य का प्रणयन किया है और गंगा में बढ़ते प्रदूषण पर अपनी चिन्ता व्यक्त की है। व्याकरणशास्त्र पर असाधारण अधिकार रखने वाली पुष्पा दीक्षित (जबलपुर) की *अग्निशिखा* और *शाम्भवी* प्रौढ़ व मधुर पद्य रचनाएँ हैं। मिथिलेश कुमारी मिश्रा (पटना) ने सुभाषचन्द्र के जीवन पर *चन्द्रचरित* नामक महाकाव्य की सर्जना की है। इन्होंने शान्त रस प्रधान *आम्रपाली* नाटिका के पाँच अंकों में वैशाली की नगर वधू आम्रपाली द्वारा बौद्ध धर्म अपनाकर आत्मिक शान्ति पाने की कथा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। इनका *दशमस्त्वमसि* दस मनोरंजक एकांकियों का संग्रह है।

नलिनी शुक्ला *'व्यथिता'* (कानपुर) ने *राधानुनय* (नृत्यनाटिका) *मुक्तिमहोत्सव* (नाट्य), *पार्वतीतपश्चर्या* (ऑपेरा) *कथासप्तक* (कथासंग्रह), *भावाञ्जलि, वाणीशतक* (पद्य) आदि काव्यों का प्रणयन किया है।

कुछ कवयित्रियों ने ललित ग्राम्य गीतों की लोकधुन पर पावस, वसन्त आदि विषयों पर संगीतमय रचनाएँ लिखी हैं। नलिनीशुक्ला विरचित *कजरी* की कतिपय पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं—

श्रावण आगत एषः।
घनघनगर्जितनादितमुरजः श्रावण आगत एषः।
नृत्यति विह्वलमुग्धशिखावलरुन्नतपुच्छसुवेशः।
निर्झरिणी,पारिजात पृ.9

समवृत्त, विषमवृत्त, दण्डकादि अल्प प्रचलित छन्दों में भी महिलाओं के द्वारा प्रणीत रचनाएँ उपलब्ध होती हैं। कमलापाण्डेय का एक दण्डक छन्द उद्धृत है—

जय सुरधुनि! कोटिपापौघसंहारि-शंकारि संसारभीहारि-
चेतस्तमोहारि-मोहारि-चिद्वारि-चंचच्चमत्कारकल्लोलितालोक-कूलंकषे!
हे जगद्वन्दिते! भ्राजतां भूतले भासतां भारते,
देवि गङ्गे! नमो देवि गङ्गे नमो, देवि गङ्गे नमः।।-श्रीगङ्गादण्डकम्, पद्य सं- 3

यहाँ आरम्भिक दो 'न' गणों के बाद 27 'र' गणों का प्रयोग हुआ है।

सावित्रीदेवी शर्मा ने *संस्कृतगीतांजलि* में अयोध्या नरसंहार से फैली धर्मान्धता को आधार बनाकर धर्मनिरपेक्षता के छद्म आवरण में अपनी स्वार्थ सिद्धि करने वाले राजनेताओं की भर्त्सना की है। इसी परम्परा में कमलारत्नम्, महाश्वेता चतुर्वेदी, शशि तिवारी, नवलता, कमल अभ्यंकर, सिम्मी कंधारी, शशि तिवारी (आगरा) वेदकुमारी घई (जम्मू), रमाबाई, सुधासहाय, इलाघोष, वीणापाणि आदि महिला रचनाकारों की सर्जनात्मक रचनाएँ समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। इनमें समसामयिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। अधिकांश कवयित्रियों ने चाहे वे किसी भी कालखण्ड से सम्बद्ध हों, उन्होंने मानव-हृदय की सूक्ष्मतम अनुभूतियों को सशक्त व सरस अभिव्यक्ति दी है।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि संस्कृत काव्य सर्जना के क्षेत्र में महिला रचनाकारों की एक दीर्घ परम्परा विद्यमान है। गद्य, पद्य, नाट्य, चम्पू, महाकाव्य, नृत्यनाटिका(ऑपेरा), नाटिका, संगीतिका, लोकगीत, कथा आदि महत्त्वपूर्ण विधाओं में असाधारण साहित्यिक वैशिष्ट्य से मण्डित रचनाओं से संस्कृत साहित्य को समद्ध बनाने का स्तुत्य कार्य महिलाओं ने भी किया है। प्राचीन-मध्यकालीन कवयित्रियों की रचनाएँ जहाँ पारम्परिक छन्दों में मिलती है, वहीं आधुनिक कवयित्रियों ने अपनी रचनाओं में पारम्परिक छन्दों के साथ-साथ गीति, गजल, कजरी, मुक्तछन्द आदि के निर्बाध प्रयोग किए हैं। सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं राजनीतिक विविधतापूर्ण विषयों को इनकी रचनाओं में पर्याप्त स्थान मिला है।

ध्यातव्य बिन्दु

- कवियित्री शब्द काव्य रचना करने वाली महिलाओं के लिए प्रयुक्त होता है।
- कवयित्रियों की परंपरा वैदिक युग से ही प्रारंभ हो गई थी।
- मंत्रद्रष्टा ऋषियों के साथ ही अपाला, विश्ववारा, काक्षीवती, घोषा आदि ऋषिपुत्रियों तथा लोपामुद्रा आदि ऋषिपत्नियों का भी वेद मंत्रों का दर्शन करने वाली ऋषिकाओं के रूप में उल्लेख प्राप्त होता है।
- श्रद्धा, कामायनी, शची, पौलोमी तथा अदिति देवकोटि की कवियित्रियाँ हैं तो सार्पराज्ञी आदि देवमानवेतर कोटि की ऋषिकाएँ भी हैं।

Reprint 2026-27

- संस्कृत कवयित्रियों ने अद्भुत संवेदनाओं यथा ब्रह्म साक्षात्कार जन्य गहन आध्यात्मिक अनुभूतियों एवं सपत्नी निवारण, नारी मनोविज्ञान आदि से संबंधित मंत्रों का सृजन भी किया है।
- विज्जका (विज्जिका/विजयाङ्का) शिलाभट्टारिका, मधुरवाणी, मारुला, मोरिका, विकटनितम्बा, देवकुमारिका इत्यादि इसी शृंखला के प्रसिद्ध नाम हैं।
- दशम शताब्दी में राजशेखर ने अपने ग्रंथ काव्यमीमांसा में अपनी पत्नी अवन्तिसुन्दरी के मतों तथा सिद्धांतों की सोदाहरण व्याख्या की है।
- गंगादेवी, रामभद्राम्बा तथा तिरुमलाम्बा ने तो महाकाव्यादि की रचना द्वारा अपनी प्रबंधात्मक सर्जना प्रतिभा का परिचय दिया है।
- कवयित्री मधुरवाणी ने लोकभाषा में प्रणीत रामायण का संस्कृत रूपांतरण किया तो त्रिवेणी की वेदांत दर्शन ने अबाध गति थी।
- तमिलनाडु के कुम्भकोणम् की कवयित्री ज्ञानसुन्दरी द्वारा प्रणीत हालास्यचम्पू के छ: स्तबकों में शिव के अवतार सुन्दरेश्वर तथा देवी मीनाक्षी का मनोहरी वर्णन किया गया है।
- आधुनिक संस्कृत सर्जना में पण्डिता क्षमाराव का नाम सर्वोपरि है। इन्होंने सत्याग्रहगीता, तुकारामचरित आदि सात महाकाव्यों की रचना की।
- आधुनिक रचनाओं में कवयित्रियों ने आधुनिक विषयों यथा विधवा विवाह, बाल विवाह, सन्तानहीनता, मद्यपान, जुआखोरी इत्यादि विविध सामाजिक विषयों को भी उठाया है।
- रवीन्द्रभारती विश्वविद्यालय के उपकुलपति पद को गौरवान्वित कर चुकी डॉ. रमा चौधुरी ने भी 25 नाटकों का प्रणयन कर प्रचुर ख्याति प्राप्त की है।
- पण्डिता क्षमाराव की पुत्री लीलाराव ने भी 24 एकांकियों का प्रणयन किया है तथा स्वदेश और विदेशों में उनका अभिनय भी करवाया है।
- वनमाला भवालकर ने नृत्यनाटिकाओं का प्रणयन किया तो साईबाबा की स्तुति भावपूर्ण स्तोत्र रचना भी की।
- कमला पाण्डेय ने 11 सर्गों में 'रक्षत गंगाम्' महाकाव्य द्वारा बढ़ते प्रदूषण पर अपनी चिंता व्यक्त की है।
- इसी प्रकार पुष्पा दीक्षित, मिथिलेश कुमारी मिश्रा, नलिनी शुक्ला इत्यादि नाम भी इनकी रचनाओं द्वारा अविस्मरणीय बन गए हैं।

Reprint 2026-27

- सावित्रीदेवी शर्मा ने अयोध्या नरसंहार से फैली धर्मान्धता को आधार बनाकर स्वार्थ सिद्धि करने वाले राजनेताओं की भर्त्सना संस्कृतगीतांजली नामक काव्य में की है।
- इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि संस्कृत काव्य जगत में महिला रचनाकारों की एक दीर्घ परम्परा विद्यमान है, जिन्होंने गद्य, पद्य, नाट्य, चम्पू, महाकाव्य मुक्तछन्दादि के भी निर्बाध प्रयोग किये हैं और सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय, आध्यात्मिक, राजनीतिक आदि सभी विषयों पर रचनाएँ की हैं।

अभ्यास-प्रश्न

प्र. 1. कवयित्रियों की परंपरा कब से प्रारंभ होकर कब तक चलती रही है?

प्र. 2. वैदिक काल में किन-किन ऋषिकाओं, ऋषिपुत्रिओं तथा ऋषिपत्नियों का उल्लेख प्राप्त होता है?

प्र. 3. देवकोटि और देवमानवेतर ऋषिकाओं के नाम बताइए।

प्र. 4. अपाला कौन थी? वह पुन: सौभाग्यवती कैसे बनी?

प्र. 5. अवन्तिसुन्दरी कौन थी और क्यों प्रसिद्ध है?

प्र. 6. बीसवीं शताब्दी की कवयित्रियों में किसका नाम सर्वोपरि है? यह बताते हुए उनकी पाँच रचनाओं के नाम लिखिये।

प्र. 7. निम्नलिखित रचनाओं और कवयित्रियों का समुचित मिलान कीजिए—

क	**ख**
(रचनाएँ)	**(कवयित्रियों)**
वाणीशतक	पण्डिता क्षमाराव
कृपाणिका	पुष्पा दीक्षित
रामदासचरित	नलिनी शुक्ला
अग्निशिखा	गंगादेवी
मधुराविजयमहाकाव्य	ज्ञानसुन्दरी
हालास्यचम्पू	लीलाराव

प्र. 8. आधुनिक कवयित्रियों द्वारा अपनी रचनाओं में जिन सामाजिक समस्याओं को उठाया गया है उनमें से किन्हीं पाँच समस्याओं का उल्लेख करें।

Reprint 2026-27